उपसंहार

उपसंहार

गिरिराज किशोर को बचपन से ही समस्याओं का सामना करना पड़ा। माँ के गुजर जाने से वे बाबा और नौकरों के साथ रहे, इसलिए हर घटना को गहराई से देखने लगें। उनकी शिक्षा में मामा जुगल किशोर और बहन सत्या गुप्ता ने सहयोग दिया। नौकरी में भी उन्हें बहुत सी तकलीफें सहनी पड़ी। उन्होंने बहुत से पदों पर काम किया है। उनकी पत्नी मीरा ने उनकों जीवन में हरपल सहयोग दिया है। गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व आकर्षक ही नहीं बुद्धिमान भी है। वे अध्ययन में गहरी रूचि दिखाते हैं। उन्होंने देशी-विदेशी साहित्यों का अनुवाद किया है।

गिरिराज किशोर गांधीवाद से प्रभावित है। वे ईश्वर पर भी विश्वास रखते है। दूसरों को मद्द करने में हमेशा आगे रहते हैं। वे यथार्थवादी और आदर्शवादी होने के कारण उनके साहित्य में भी यथार्थवाद और आदर्श वाद है। उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना और बालसाहित्य आदि सभी विधाओं में लेखन-कार्य किया है। वे आधुनिक हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकारों में से एक है। सन 1960 से लेखन की यात्रा आरंभ करनेवाले गिरिराज किशोर अब तक विविध विषयों को लेकर लेखन-चिंतन कर रहे हैं। उनका साहित्य मानवी जीवन से संबंध रखता है। राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विषयों को स्पर्श करते हुए समकालीन समस्याओं को उठाया है। गिरिराज किशोर के पास जीवन की व्यापक अनुभूति है।

गिरिराज किशोर वर्तमान युग के प्रतिभा संपन्न, प्रतिष्ठित एवं कुशल लेखक है। वे बहुत सीधे-साधे, सरल, संवेदनशील, संघर्षशील, दृढ निश्चयी एवं स्वाभिमानी है। गिरिराज किशोर मानवतावादी लेखक है। समाज की प्रगति के लिए साहित्य लेखन करते है। भाव, भाषाशैली, विषय, चेतना की दृष्टि से उनका साहित्य महत्वपूर्ण है।

नाटक ऐसी विधा है जो पढने के साथ उसका मंचीयकरण होता है। नाटक की कथा सिर्फ पढ़ने से ही नहीं बल्कि मंच पर प्रभावी बनती हैं। गिरिराज किशोर के नाटक समाज की यथार्थ स्थिति को दर्शाते हैं। मनोवैज्ञानिक नाटक

'नरमेध' में तारा की मानसिक कुंठा को दर्शाया है, जो विवाहित होकर भी पति के साथ खुश नहीं है। तारा पति और प्रेमी के द्वंद्व में फँसी नारी है। इनका दूसरा राजनीतिक नाटक 'प्रजा ही रहने दो' का कथानक महाभारत कालीन है। इसमें पौराणिक संदर्भों से वर्तमान स्थिति को दर्शाया है। 'घास और घोड़ा' सामाजिक नाटक है, जो आज के प्रशासन और न्यायपालिका की मिली भगत को उजागर करनेवाला नाटक है। साथ ही इसमें अवैध संबंधों का चित्रण किया गया है। उनका राजनीतिक नाटक 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' में आम आदमी का शोषण और मुखौटाधारी को बेनकाब करनेवाला है। इसमें सत्ता प्राप्ति की लालसा, कुर्सी का संघर्ष, जनता का शोषण चित्रित हुआ है। 'केवल मेरा नाम लो' मनोवैज्ञानिक नाटक है। रिश्तों के बदलते समीकरण और अस्वाभाविकता के मनोवैज्ञानिक पक्ष को उजागर करता है। सामाजिक नाटक 'जुर्म आयद' वर्तमान न्यायपालिका व्यवस्था और नारी की दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

गिरिराज किशोर के नाटकों की कथावस्तु सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट करती है। इन्होंने अपने नाटकों में सामाजिक अन्तर्विरोधों, विद्रुपताओं के साथ राजनीति को उजागर किया है। वर्तमान व्यवस्था और व्यवस्था के बीच आदमी की स्थिति को चित्रित किया है। मानवीय मूल्यों के खत्म हो जाने का चित्रण किया है। मनोवैज्ञानिक नाटकों की रचना में गिरिराज किशोर सफल रहे हैं। जिसमें तारा और रजनीकांत के मन का अर्न्तद्वंद्व स्पष्ट किया है। राजनीति के संदर्भ में गिरिराज ने राजनीतिक भ्रष्टाचार, कुव्यवस्था और सत्ता की लालसा को चित्रित किया है। राजनेताओं के झूठे वादे और मतलबी राज्यव्यवस्था को अपने नाटकों में उजागर किया है। 'प्रजा ही रहने दो' में कौरव पांडवों का युद्ध इसी का प्रमाण है।

गिरिराज किशोर की नाट्यशैली प्रभावी है। इन्होंने अपने नाटकों में समाज में फैली अनैतिक संबंध, जुल्म, अन्याय, अत्याचार, झूठी-व्यवस्था और उच्चपदस्त लोगों की भ्रष्टता आदि को उठाया है। नारी पात्रों का चित्रण बड़ा ही मार्मिक बना है। अन्याय, अत्याचार का विरोध करनेवाली द्रौपदी, उम्मेदी, आशा

का चित्रण किया है। न्याय-व्यवस्था एवं कानून-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों से सामाजिक परिवर्तन और सुव्यवस्था का संदेश दिया है। वे सफल नाटककार के रूप में हमारे सामने आते हैं। इनके सभी नाटक सफल और अच्छे नाटकों की कोटी में आते हैं।

गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में ग्रामीण समाज और शहरी समाज दोनों का चित्रण किया है। जिसमें पारिवारिक कलह के कारण संयुक्त परिवार का विघटन चित्रित किया है। आज के आधुनिक युग में होनेवाले नारी शोषण को समाज के सामने रखा है। नारी पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़ उसपर समाज परिवार, पति, कानून व्यवस्था आदि सभी जगह अत्याचार किये जाते हैं। नारी प्रतिशोध के कारण विद्रोह करती है लेकिन बहुत कम मात्रा में उसमें सफल हो पाती है। गिरिराज किशोर ने अपने सभी नाटकों में समाज-जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि सभी स्थितियों का वर्णन हुआ है। मानव जीवन के बाहर-भीतर का चित्रण इनके साहित्य में हुआ है। दांपत्य जीवन में मानसिक कुंठा का प्रभावी चित्रण किया है। नारी की द्वंद्वात्मक स्थिति, असहायता, अवैध संबंध, प्रेम में असफलता, विद्रोही भावना आदि को तारा, वंती, द्रौपदी, विमला, सुलभा और उम्मेदी के माध्यम से समाज के सामने रखा है। भ्रष्ट राजनीति आज के युग में कटू सत्य ही नहीं अधःपतन का कारण बताया है।

पुलिस और कानून-व्यवस्था तो समाज में लोगों की सुरक्षा के लिए होती है लेकिन ये ही जनता पर जुल्म ढ़ाते हैं। बिगडती समाज-व्यवस्था तथा पुलिस की गलत नीति को चित्रित किया है। गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में समाज-जीवन के सभी पहलुओं को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। लगता है आधुनिक समाज-जीवन की तसवीर इन नाटकों में स्पष्ट दिखाई देती है। बहुआयामी नाटककार गिरिराज किशोर है ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा।

वस्तुतः वर्तमान युग समस्याओं का युग है। मनुष्य जीवन में समस्याएँ निरंतर बढती ही जा रही है, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ पर समस्या न हो।

प्राकृतिक संकट से उत्पन्न समस्याएँ हैं; क्योंकि वे समाज द्वारा निर्मित होती है। केवल समस्या निर्मिति के मंच अलग-अलग है। जैसे - धर्म, अर्थ, राजनीति तथा प्रशासन आदि। गिरिराज किशोर ने पारिवारिक समस्या, दांपत्य समस्या तथा नारी समस्या आदि अनेक समस्याओं को बताया है। द्रौपदी के पाँच पति होकर भी भरी सभा में वस्त्राहरण के समय उसकी रक्षा करने कोई नहीं आता। 'जुर्म आयद' में आशा पर तो उसका पति ही अत्याचार करता है। ऐसे बहुत से कारण है, जिससे दांपत्य जीवन टूटकर समस्या बन जाता है। नारी किसी भी क्षेत्र में समस्या से मुक्त नहीं है। 'प्रजा ही रहने दो' इस नाटक में कौरव पांडवों के जुए के खेल में द्रौपदी को दाँव पर लगाया जाता है। 'घास और घोडा' में पति प्रेम से असंतुष्ट नारी अपनी इच्छापूर्ति के लिए गैर आदमी से संबंध रखती है, जिससे अवैध यौन संबंध की समस्या उत्पन्न होती है। प्रेम जैसी कोमल भावना में कई बार असफलता का सामना करना पडता है 'नरमेध' की तारा, वंती और नारी के जीवन की प्रेम में असफलता ये समस्या ही है। नारी अत्याचार बरर्दास्त न होकर, शोषण से त्रस्त होनेपर आत्महत्या का रास्ता अपनाती है। इस तरफ भी लेखक ने ध्यान आकर्षित किया है। सत्ता के लिए एक दुसरे का कत्ल करके, युद्ध करके सत्ता की प्राप्ति की जाती है। यह एक स्वार्थी प्रवृति है। जो आजकल बढती जा रही है। 'प्रजा ही रहने दो' में इस समस्या पर भी प्रकाश डाला है।

भ्रष्टाचार हर जगह फैला है, यह 'घास और घोड़ा' और 'जुर्म आयद' इन दो नाटकों में स्पष्ट किया है। झुठे गवाहों और प्रमाणों के कारण सच्चा न्याय मिलना मुश्किल हो गया है। इस बात को स्पष्ट करते हुए न्याय-व्यवस्था पर चोट की गई है। पुलिस-व्यवस्था के रक्षक की रक्षक के बजाए भक्षक प्रवृति को 'जुर्म आयद' में दिखाया है। पढ़े-लिखे लोगों में ईश्वर भक्ति की समस्या को उजागर किया है। आर्थिक स्थिति इन्सान को लाचार बना देती है। इस समस्या से निम्नवर्ग तथा मध्यवर्ग ज्यादा प्रभावित है। किशोर जी ने अपने नाटकों में इस तरह की विविध समस्याओं का चित्रण कर वर्तमान समाज को उसके समकालीन स्थिति से परिचित कराया है।

'सामाजिक चेतना' चेतना का महत्त्वपुर्ण अंग है क्योंकि हर क्षेत्र समाज से जुड़ा होता है। इस कारण समाज में किसी भी क्षेत्र में चेतना जागृत होने पर वह क्षेत्र प्रगति की ओर बढता है। साथ ही समाज भी प्रगति की ओर बढता है। आजकल पारिवारिक रिश्तों में होता परिवर्तन चेतना का ही परिणाम है। वैचारिक भिन्नता, अस्तित्व की रक्षा, नई और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष ये चेतना के ही कारण है। पति के अन्याय के खिलाप लडती पत्नियाँ नजर आ रही है। समाज, परिवार और पति का विरोध करने की चेतना नारी के मन में जागृत हो गयी है। इसका 'जुर्म आयद' नाटक में चित्रण किया है। साथ ही सुलभा हो या द्रौपदी नारी चेतना प्राचीन काल से चली आ रही है इसका भी वर्णन है।

'केवल मेरा नाम लो' में भ्रष्टाचार जैसी गंभीर समस्या का विरोध करने का संदेश रजनीकांत के माध्यम से दिया है। आर्थिक चेतना एक सामाजिक चेतना है, जो मनुष्य को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए प्रेरित करती है। मनुष्य इस चेतना से चेतित होकर आर्थिक परिवर्तन करता है। इस बात को पंडित ख्यालिराम के द्वारा स्पष्ट किया गया है। राजनीतिक दुष्चक्र में पिसती कराहती और विद्रोह के लिए उतारू जनता का सहज और स्वाभाविक चित्रण किशोर ने अपने नाटकों में किया है। इस प्रकार किशोर ने अपने नाटकों में सामाजिक चेतना के विविध आयामों को बडे मार्मिकता से चित्रित किया है। गिरिराज किशोर के साहित्य को पढ़ने के बाद वे एक अच्छे साहित्यकार, अच्छे नाटककार और एक सफल व्यक्तित्व के रूप में हमारे सामने खडे हो जाते हैं, उनका साहित्य मौलिक होने के साथ-साथ पथदर्शक भी है।

अतः लगता है गिरिराज किशोर एक अच्छे सामाजिक नाटककार है।

मौलिकता -

1) गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व एवं रचनासंसार को स्पष्ट किया है।

2) गिरिराज किशोर के नाटकों में समाज के विविध आयामों को चित्रित किया गया है।

3) नाटकों में नारी समस्याओं को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विवेचित किया है।

4) गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित पारिवारिक जीवन का चित्रण पारस्पारिक संबंधों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

5) विवेच्य नाटकों का सूक्ष्मता से अध्ययन करके सामाजिक चेतना को जानने का प्रयास किया है।

उपलब्धियाँ -

1) गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में स्वयं की अनुभूतियों आस-पास की परिस्थितियों को वाणी दी है।

2) अपने नाटकों द्वारा गिरिराज किशोर ने नारी को अन्याय तथा अत्याचार का विरोध करने की प्रेरणा दी है।

3) इन नाटकों में राजनैतिक भ्रष्टता को उजागर करते हुए आम आदमी के शोषण को समाज के सामने रखा है।

4) नारी के अंतर्मन को खोलते हुए, नारी को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश किशोर के नाटकों में दृष्टिगोचर होती है।

5) सामाजिक सुधार और सुव्यवस्था को महत्त्वपूर्ण बताया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

1) गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित नारी समस्याएँ।

2) गिरिराज किशोर के नाटकों मे नारी-चेतना।

3) गिरिराज किशोर के नाटकों में राजनीतिक-चेतना का अध्ययन।

4) गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समाज-जीवन।

यहाँ मैंने अपनी सीमा में अध्ययन किया है। उपर्युक्त विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य हो सकता है

****